

जैनेन्द्र का जीवन दर्शन

संक्षेपिका

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग में

पी-एच०डी० उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध प्रन्वध

निर्देशक :

डॉ० प्रेम प्रकाश रस्तौगी

एम०ए०, पी-एच०डी०

बरेली कालेज, बरेली

प्रस्तुत कर्त्ता

शिवचरण विद्यालंकार

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

अगस्त, १९८२

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

—

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

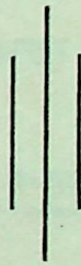
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

जैनेन्द्र का जीवन दर्शन

—❖—
संक्षेपिका

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग में
पी-एच०डी० उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध प्रन्वध



निर्देशक :

डॉ० प्रेम प्रकाश रस्तौगी
एम०ए०, पी-एच०डी०
बरेली कालेज, बरेली

प्रस्तुत कर्त्ता

शिवचरण विद्यालंकार

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

अगस्त, १९८२

नैदरलैण्ड् इन्डिज्

आर्कैडिज्

है आर्कैडिज् इन्डिज् आर्कैडिज् इन्डिज् आर्कैडिज्

आर्कैडिज् इन्डिज् आर्कैडिज् इन्डिज्

आर्कैडिज् इन्डिज्

आर्कैडिज् इन्डिज्

आर्कैडिज् इन्डिज्

आर्कैडिज् इन्डिज्

आर्कैडिज् इन्डिज्

आर्कैडिज् इन्डिज्

आर्कैडिज् इन्डिज्

आर्कैडिज् इन्डिज्

आर्कैडिज् इन्डिज्

विषय सूची

जैनन्द् का जीवन दर्शन

प्रथम अध्याय

जैनन्द् का व्यक्तित्व कृतियों में प्रतिफलित

- १- व्यक्तित्व के मूल्यार्कन के आधार
- २- जैनन्द् सर्व युग बोध
- ३- जैनन्द् की जीवन दृष्टि
- ४- जैनन्द् का आत्मचिन्तन

द्वितीय अध्याय

जैनन्द् के उपन्यासाँ में दर्शन

- १- परमात्मा
- २- ज्ञात
- ३- जीव
- ४- पुनर्जन्म
- ५- भाग्यवाद
- ६- भलाई-बुराई
- ७- सदाचार
- ८- सत्य
- ९- इमानदारी
- १०- अहिंसा एवं आत्म पीडन

पृष्ठ संख्या

पृष्ठ संख्या का हवाला

पृष्ठ संख्या

पृष्ठ संख्या के विषय में जानकारी के हवाले

- पृष्ठ संख्या के विषय में जानकारी - 1
- पृष्ठ संख्या के हवाले - 2
- पृष्ठ संख्या के हवाले - 3
- पृष्ठ संख्या के हवाले - 4

पृष्ठ संख्या

पृष्ठ संख्या के विषय में जानकारी

- पृष्ठ संख्या - 1
- पृष्ठ संख्या - 2
- पृष्ठ संख्या - 3
- पृष्ठ संख्या - 4
- पृष्ठ संख्या - 5
- पृष्ठ संख्या - 6
- पृष्ठ संख्या - 7
- पृष्ठ संख्या - 8
- पृष्ठ संख्या - 9
- पृष्ठ संख्या - 10

११- यथार्थवाद

१२- बुद्धिवाद

१३- अनुभववाद

१४- स्वच्छन्दतावाद

१५- जैनन्द्र का दार्शनिक सम्प्रदाय - समन्वयवाद अथवा अद्वैतवाद

तृतीय अध्याय

जैनन्द्र के उपन्यासी में मनोविज्ञान

१- मनःस्थिति

२- चेतन - अवचेतन

३- बन्ध

४- (अ) कुण्ठा

(आ) अतृप्ति

५- विद्रोही व्यक्तित्व

६- (अ) अहं

(आ) आत्मोत्पत्ति

७- व्यक्तित्व की पूर्णता

चतुर्थ अध्याय

जैनन्द्र और समाकालीन विचारक

१- जैनन्द्र और डा० डी०एच० लारेन्स

२- जैनन्द्र और वज्रिनिया वुल्फ

३- जैनन्द्र और गाल्सवर्दी

४- जैनन्द्र और तुनिव

५- जैनन्द्र और टाल्सटाय

६- जैनन्द्र और गांधी

आरम्भिक - ११

आरम्भिक - ११

आरम्भिक - ११

आरम्भिक - ११

आरम्भिक आरम्भिक - आरम्भिक आरम्भिक - ११

आरम्भिक विभाग

आरम्भिक विभाग में विद्यमान हैं इनके

आरम्भिक - १

आरम्भिक - १

आरम्भिक - १

आरम्भिक (१) - १

आरम्भिक (१)

आरम्भिक विभाग - १

आरम्भिक (१) - १

आरम्भिक (१)

आरम्भिक विभाग - १

आरम्भिक विभाग

आरम्भिक विभाग में विद्यमान हैं इनके

आरम्भिक विभाग में विद्यमान हैं इनके - १

आरम्भिक विभाग में विद्यमान हैं इनके - १

आरम्भिक विभाग में विद्यमान हैं इनके - १

आरम्भिक विभाग में विद्यमान हैं इनके - १

आरम्भिक विभाग में विद्यमान हैं इनके - १

पंचम अध्याय

जैनन्द् के साहित्यिक मानदण्ड और उनके उपन्यास

- १- तटस्थतावादी विचार दर्शन
- २- मनःस्तत्त्व और अन्तीकन्द का विश्लेषण
- ३- आत्मव्यथा और करुणा
- ४- सामाजिक और आध्यात्मिक उल्लङ्घन
- ५- व्यक्तिवादी जीवन पद्धति और उसकी अभिव्यक्ति
- ६- निर्वैयक्तिक जीवनादर्श और साहित्यिक सत्य

षष्ठ अध्याय

जैनन्द् और समकालीन हिन्दी उपन्यासकार

- १- प्रेमचन्द
- २- भगवती चरण वर्मा
- ३- अमृतलाल नागर
- ४- अज्ञेय
- ५- इलाचन्द जीशी
- ६- उपेन्द्रनाथ अश्क

उपसंहार

जैनन्द् एक विचारक (साहित्यिक)

प्राथमिक भाग

प्राथमिक भाग में प्रमुख प्रश्नों का हल

- प्रश्न 1. प्राथमिक भाग में -
- प्रश्न 2. प्राथमिक भाग में -
- प्रश्न 3. प्राथमिक भाग में -
- प्रश्न 4. प्राथमिक भाग में -
- प्रश्न 5. प्राथमिक भाग में -
- प्रश्न 6. प्राथमिक भाग में -

प्राथमिक भाग

प्राथमिक भाग में प्रमुख प्रश्नों का हल

- प्रश्न 1. प्राथमिक भाग में -
- प्रश्न 2. प्राथमिक भाग में -
- प्रश्न 3. प्राथमिक भाग में -
- प्रश्न 4. प्राथमिक भाग में -
- प्रश्न 5. प्राथमिक भाग में -
- प्रश्न 6. प्राथमिक भाग में -

प्राथमिक भाग

प्राथमिक भाग में प्रमुख प्रश्नों का हल

जैनेन्द्र का जीवन दर्शन

हिन्दी साहित्य में जैनेन्द्र का पदापणी एक नये युगप्रवर्तक के रूप में हुआ। यह हिन्दी साहित्य की महान उफ़लवृत्ति थी। जैनेन्द्र आदर्शवादी और प्रतिभावान कथाकार हैं। उनके साहित्य में दर्शन और मनोविज्ञान का सामन्वय उनकी अमूर्ति देने है। इस शोध प्रबन्ध में जैनेन्द्र के व्यक्तित्व और कृतित्व पर विश्लेषण विवेचन किये जाने का प्रयास किया गया है।

किस्से, तिलस्मि और ऐय्यारी जैसी चली आ रही परम्परा जो अब केवल किसी लकीर के पीटने मात्र था जैनेन्द्र ने साहित्य को एक नया आयाम दिया। एक नया नारा दिया जो मनोविज्ञान और दर्शन से अनुप्राणित था। जैनेन्द्र का साहित्य मनोविज्ञान और दर्शन के सामन्वय का साहित्य है। जैनेन्द्र ने मानव के समग्र रूप का उनकी वृत्तियों का उसके अन्तर में निहित सत्यों का उद्घाटन किया है। प्रथम अध्याय में व्यक्तित्व के मूल्यार्थ का आधार, जैनेन्द्र एवं युग बोध, जैनेन्द्र की जीवन दृष्टि तथा जैनेन्द्र के आत्म चिन्तन पर प्रकाश डाला गया है।

“जैनेन्द्र के उपन्यासों में दर्शन” नामक द्वितीय अध्याय में परमात्मा, जगत, जीव, पुनर्जन्म, भाग्यवाद, मलाई बुराई, सदाचार, सत्य, ईमानदारी, अहिंसा एवं आत्म पीड़न, यथार्थवाद, बुद्धिवाद, अनुभववाद, स्वच्छन्तावाद तथा जैनेन्द्र का दार्शनिक सम्प्रदाय - समन्वयवाद अथवा अतैत्तवाद आदि उनके उपन्यासों में प्रयुक्त दर्शन के विषयों पर विचार किया गया है।

[Home](#)
[About Us](#)
[Contact Us](#)
[Privacy Policy](#)
[Terms of Service](#)

तृतीय अध्याय में, जैनेन्द्र के उपन्यासों में मनोविज्ञान के अन्तर्गत विस्तृत रूप से मनोविज्ञान से सम्बन्धित विषयों पर प्रकाश डाला गया है। इसमें मनःस्थिति, चेतन-अचेतन, अन्ध, कुण्ठा, अतृप्ति, विद्रोही व्यक्तित्व, अहं आत्मोत्पत्ति, व्यक्तित्व की पूर्णता आदि उनके उपन्यासों में प्रयुक्त मनोविज्ञान के विषयों पर ~~प्रकाश डाला~~ ^{चर्चा की} गयी है।

‘जैनेन्द्र और समकालीन विचारक’ नामक चतुर्थ अध्याय में जैनेन्द्र के समकालीन भारतीय एवं पाश्चात्य विचारकों जैसे डा० डी० एच० लारेन्स, वॉर्नरिन्या बुल्फ, जान गाल्सवर्दी, तुर्गनिय, टालस्टाय और गांधी जी आदि विद्वानों के विचारों से तुलना की गई है।

पंचम अध्याय ‘जैनेन्द्र के साहित्यिक मानदण्ड और उनके उपन्यास’ में जैनेन्द्र के तटस्थवादी विचारदर्शन, मनःस्वतन्त्रता और अन्तर्बन्धों का विश्लेषण, आत्मव्यथा और करुणा, सामाजिक और आध्यात्मिक उलझने, व्यक्तिवादी जीवन पद्धति और उसकी अभिव्यक्ति, निर्व्यक्तिक जीवनादर्श और साहित्यिक सत्य आदि पर विचार किया गया है।

षष्ठ अध्याय ‘जैनेन्द्र और समकालीन हिन्दी उपन्यासकार’ के अन्तर्गत प्रेमचन्द, भावती चरण वर्मा, अमृतलाल नागर, अज्ञेय, श्लाघेन्द्र जोशी तथा उपेन्द्रनाथ अश्क आदि की मुख्य मुख्य रचनाओं से तुलना की गई है।

उपसंहार के अन्तर्गत उनके सम्पूर्ण कृतित्व पर संक्षिप्त रूप से प्रकाश डाला गया है और उनके साहित्य का मूल्यांकन किया गया है तथा जैनेन्द्र के विचारक रूप को महत्ता प्रदान की गई है। क्योंकि उनका विचारक रूप उनके कथाकार रूप से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। साथ ही जैनेन्द्र को प्रेमचन्दोत्तर उपन्यासकारों में युगप्रवर्तक के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

...
...
...
...

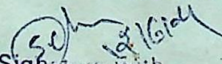
...
...
...
...

...
...
...
...

...
...
...
...

...
...
...
...

Entered in Database


Signature with